नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नक्सलवाद का अंत अब नजदीक!

बस्तर के जंगलों में बीते चौबीस घंटे केवल एक मुठभेड़ की खबर नहीं हैं. यह भारत की आंतरिक सुरक्षा इतिहास का एक निर्णायक मोड़ है. एक दशक से अधिक समय तक बस्तर को रक्तरंजित करने वाला, 1.8 करोड़ रुपये के इनाम का खूंखार माओवादी कमांडर मांडवी हिडिमा अंततः ढेर कर दिया गया है. आंध्र प्रदेश,छत्तीसगढ़ सीमा के सघन जंगलों में हुई इस मुठभेड़ ने न केवल सुरक्षा बलों की अदम्य क्षमता का प्रमाण दिया है, बल्कि इसने यह भी संकेत दिया है कि नक्सलवाद के अंत की आहट अब साफ-साफ सुनाई देने लगी है.

मांडवी हिडिमा कोई साधारण माओवादी नहीं था. वह सीपीआई (माओवादी) की पीएलजीए बटालियन नंबर 1 का प्रमुख और संगठन की सेंट्रल कमेटी का अहम सदस्य था. उसकी पकड़ इतनी व्यापक थी कि बस्तर के दूर-दराज इलाकों में उसका नाम ही दहशत फैलाने के लिए काफी था. ग्रामीणों की हत्या से लेकर सुरक्षाबलों पर घातक हमले,हिडिमा का रिकॉर्ड लाल आतंक की पूरी कहानी समेटे हुए था. उनके नेतृत्व में माओवादियों द्वारा किया गया 25 मई 2013 का झीरम घाटी नरसंहार भारतीय लोकतंत्र पर सबसे भयंकर हमलों में से एक था. कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के काफिले पर हुए इस सुनियोजित हमले में नंदकुमार पटेल, महेंद्र कर्मा, विद्या चरण शुक्ल और 29 से अधिक लोगों की हत्या ने पूरे देश को हिला दिया था. यह हमला केवल राजनीतिक प्रतिशोध नहीं था. यह लोकतांत्रिक ढांचे को भयभीत करने का प्रयास था. उस काले दिन का मुख्य साजिशकर्ता हिडिमा था. जाहिर है वही खूनी हाथ हमेशा के लिए शांत हो चुके हैं. बस्तर के सामाजिक मानस में यह अंत न्याय के रूप में दर्ज होगा.

बहरहाल, मुठभेड़ की तीव्रता इस बात का प्रमाण है कि माओवादी नेतृत्व इस क्षेत्र में पुनर्गठन की आखिरी कोशिश में था. परन्तु सुरक्षा बलों की खुफिया रणनीति, स्थानीय जागरूकता और आधुनिक तकनीकी सहायता ने इसे विफल कर दिया. यह ऑपरेशन साबित करता है कि बस्तर अब उस दौर में प्रवेश कर चुका है जहां राज्य की इच्छा, सुरक्षाबलों की सटीकता और जनता का समर्थन एक साथ खड़े हैं. हिडिमा की मौत को माओवादी आंदोलन के पिछले बीस वर्षों का सबसे बड़ा नुकसान माना जा रहा है. यह ध्यान रहे हिडिमा रणनीति, भर्ती और प्रशिक्षण, सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था.उसका जाना माओवादी नेतृत्व की रीढ़ तोड़ देगा. जमीनी स्तर पर पहले ही सरेंडर की संख्या बढ़ रही है. अब यह प्रक्रिया और तेज होने की संभावना है.

दरअसल, दक्षिण बस्तर के जिन क्षेत्रों को हिडिमा दुर्गम किलों की तरह इस्तेमाल करता था, वे अब धीरे-धीरे सुरक्षा बलों के नियंत्रण में लौटेंगे. इसके बाद सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या नक्सलवाद अब खत्म हो जाएगा? जवाब यह है कि यह अंत की शुरुआत ज़रूर है. नक्सलवाद अपनी वैचारिक जमीन खो चुका है. आम आदिवासी अब विकास, सड़क, शिक्षा, मोबाइल नेटवर्क और रोज़ रोजगार चाहते हैं. इन मांगों को सुनने वाली सरकार उनके साथ खड़ी है. दूसरी तरफ माओवादी संगठन अपने सबसे प्रभावी कमांडरों को खो चुका है, जबकि नई पीढ़ी इस हिंसक विचारधारा में रुचि नहीं ले रही.

मांडवी हिडिमा का अंत केवल एक ऑपरेशन की सफलता नहीं, बल्कि बस्तर की नई सुबह का उद्घोष है. यह उस बस्तर की उम्मीद को मजबूत करता है जो दशकों से लाल आतंक की छाया में घुटता रहा है. आज यह साफ दिखाई दे रहा है कि क्रूरता की उम्र लंबी नहीं होती और बंदूक की भाषा अंततः पराजित होती है. अगर यही रफ्तार बनी रही तो आने वाले दिनों में भारत वह ऐतिहासिक घोषणा कर सकेगा कि नक्सलवाद अब अतीत है!

हसीना का प्रत्यर्पण भारत पर बंधनकारी नहीं

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को उनकी अनुपस्थिति में बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध ट्रिब्यूनल ने मौत की सजा सुनाई, उन पर आरोप था कि उन्होंने 2024 के छात्र आंदोलन को कुचलने के लिए घातक हिंसा का प्रयोग किया, जिसमें सैंकड़ों लोगों की जानें गई. हसीना ने ट्रिब्यूनल को 'कंगारू कोर्ट' कहते हुए कहा कि मुकदमा शुरू होने से पहले ही यह फैसला तय हो गया था. ट्रिब्यूनल को उनके राजनीतिक विरोधी नियंत्रित किए हुए हैं. बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने दिल्ली से आग्रह किया है कि 78 वर्षीय हसीना को वापस ढाका भेजा जाए. प्रबल संभावना यही है कि हसीना को ढाका को नहीं सौंपा जाएगा.

दिल्ली ने हसीना के प्रत्यर्पण की मांग प्राप्त होना तो स्वीकार किया है, लेकिन इस बारे में वह क्या करेगी, इसका कोई संकेत नहीं दिया है. भारत की पोजीशन में कोई बदलाव नहीं आया है. दिल्ली की ढाका के साथ जो 2013 की प्रत्यर्पण संधि है, वह भी हसीना को किसी भी राजनीतिक साजिश से सुरक्षाकवच प्रदान करती है. संधि का अनुच्छेद 9 कहता है कि अपराध अगर सियासी पहलू का है, तो प्रत्यर्पण से इंकार किया जा सकता है. हसीना का प्रत्यर्पण जटिल व लंबी प्रक्रिया है और मृत्युदंड ने इसकी जटिलता में अतिरिक्त इजाफा किया है.

बदले की भावना से मौत की सजा

बदले की भावना के चलते हसीना को कानूनी नाटक से सजा-ए-मौत दी गई है और ढाका अब दिल्ली के लिए मुख्य सुरक्षा चिंता है. हसीना ने 2010 में जिस ट्रिब्यूनल को स्थापित किया था पाकिस्तानी युद्ध अपराधियों व उनके बंगाली साथियों के ट्रायल के लिए (जिन पर बांग्लादेश के 1971 के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नरसंहार का आरोप था) उसने ही अंतरिम सरकार के दबाव में उनके खिलाफ मौत की सजा सुनायी है.

हसीना भारत की अच्छी दोस्त रही हैं, जिन्होंने न सिर्फ उसके आर्थिक व सुरक्षा हितों में सहयोग किया है बल्कि अतिवादी तत्वों को भी नियंत्रण में रखा था. ऐसी दोस्त को जरूरत के समय अकेला छोड़ना भारत की साख के लिए अच्छा नहीं होगा. भारत के लिए यह भी चिंता का विषय है कि ढाका फिर से पाकिस्तान के साथ संबंध बेहतर करने के प्रयास में लगा हुआ है. बदले की भावना के चलते हसीना को कानूनी नाटक से सजा-ए-मौत दी गई है और ढाका अब दिल्ली के लिए मुख्य सुरक्षा चिंता है.

हसीना ने 2010 में जिस ट्रिब्यूनल को स्थापित किया था पाकिस्तानी युद्ध अपराधियों व उनके बंगाली साथियों के ट्रायल के लिए (जिन पर बांग्लादेश के 1971 के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नरसंहार का आरोप था) उसने ही अंतरिम सरकार के दबाव में उनके खिलाफ मौत की सजा सुनायी है.

1971 के दौरान 30 लाख लोगों की हत्या हुई थी व लगभग 2,50,000 महिलाओं के साथ दुष्कर्म हुआ था. इनके दोषियों को सजा दिलाने की बांग्लादेश की सिविल सोसाइटी लंबे समय से मांग कर रही थी, जिसे स्वीकार करते हुए हसीना ने इस ट्रिब्यूनल की स्थापना की थी, जिसने जमात-ए-इस्लामी के अनेक युद्ध अपराधियों को मृत्युदंड दिया था. इसलिए इस ट्रिब्यूनल द्वारा हसीना को पिछले साल के छात्र आंदोलन में हुई मौतों के लिए मृत्युदंड देना कानूनन उचित प्रतीत नहीं होता है. साथ ही हसीना और उनके तत्कालीन गृहमंत्री असदुज्जमान खान पर 12 छात्र प्रदर्शनकारियों की मौत के भी आरोप थे.

आईजी बन गए सरकारी गवाहः इस केस में मुख्य गवाह बांग्लादेश के पूर्व इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस हैं, जो हिरासत में हैं और सरकारी गवाह बन गए हैं. शेख मुजीबुर्रहमान का धर्मनिरपेक्ष बांग्लादेश मुस्लिम कट्टरपंथ के गड्ढे में गिरता नजर आ रहा है और हसीना उसके स्पष्ट निशाने पर हैं. आईएसआई के समर्थन से भारत विरोधी तत्व बांग्लादेश में एकजुट हो रहे हैं जिसे हसीना रोके हुए थी. ढाका का वर्तमान शासन भारत की सुरक्षा चिंताओं को लेकर उदासीन है.

पाकिस्तान पहले से ही निरंतर सुरक्षा खतरा है और इसमें बांग्लादेश का जुड़ जाना हमारी सुरक्षा एजेंसीज के काम को अतिरिक्त कठिन बना देता है. लेकिन समस्या स्वयं बांग्लादेश के लिए भी है. जिस तरह से बांग्लादेश के छात्र, धर्मनिरपेक्ष वर्ग व सिविल सोसाइटी मिलकर धार्मिक कट्टरपंथियों का जबरदस्त विरोध कर रहे हैं उससे बांग्लादेश में गृह युद्ध की आशंका बढ़ती जा रही है.

-नरेंद्र शर्मा

ग्वालियर चंबल डायरी

इंतजार की इंतहा के बाद सूचियां फाइनल, अब बस ऐलान की देर

हरीश दुबे

'**माना** कि तेरी दीद के क़ाबिल नहीं हूँ मैं, तू मेरा शौक़ देख मेरा इंतिज़ार देख.' लगता है कि मशहूर शायर इक़बाल ने बरसों पहले यह लाइनें शायद उन कमलदलियों के लिए लिखी होंगी जो निगम, बोर्ड और प्राधिकरणों में ताजपोशी का इंतजार करते अघा गए हैं. हालांकि अब यह कहा जा रहा है कि अगले महीने तक इन नियुक्तियों की सूचियां जारी कर दी जाएंगी लेकिन इंतजार की इंतहा इस दावे पर यकीन नहीं होने दे रही.

पार्टी के सूबा सदर बीते रोज ग्वालियर तशरीफ लाए तो पदाभिलाषी उनके आगे पीछे मंडराते रहे. वे पदों की दौड़ में शामिल कुछ नेताओं के घर भी पहुंचे. चूंकि नियुक्तियां सत्ता और संगठन के समन्वय से होंगी, लिहाजा नियुक्तियों में बैतूल की भूमिका अहम रहने वाली है. पहले हरियाणा, दिल्ली और फिर बिहार विधानसभा चुनावों में आला लीडरान की व्यस्तता के चलते निगम मंडलों में नियुक्तियों के मसले को होल्ड पर रखा गया था, पार्टी ने इन चुनावी चुनौतियों पर कामयाबी से पार पा ली है, लिहाजा कहा जा रहा है कि अब ऐलान में देर नहीं होगी.

पता चला है कि सूबे के सभी सूबेदारों की राय से बनी नियुक्तियों की पहली फेहरिस्त को सीएम ने अपनी मोहर लगाकर शीर्ष नेतृत्व को भेज दिया है. सत्ता वीथिकाओं में दिल्ली की मंजूरी का इंतजार है. ग्वालियर में जीडीए, साडा और मेला जैसे बड़े प्राधिकरण आधे दशक से राजनीतिक नेतृत्व के बगैर ही चल रहे हैं. पहले कमलनाथ और सिंधिया की रस्साकसी में उलझकर सूचियां अटकी रहीं. शिवराज के आखिरी कार्यकाल में भी नियुक्तियां अटकी रहीं, चुनाव के एक, सवा साल पहले शिवराज सरकार ने कुछ निगम मंडलों में नियुक्तियां की भी, लेकिन इस सूची में ज्यादातर उन सिंधिया समर्थक पूर्व विधायकों को एडजस्ट किया गया, जिन्होंने कमलनाथ का तख्ता पलट कर प्रदेश में कमलदल की वापसी के लिए अपनी विधायकी और मंत्रीपद कुर्बान किया था. इन नियुक्तियों में मूल भाजपा के कैडर को नामचारे के लिए ही जगह मिली. इस बार भी भाजपा के मूल और महल, दोनों खेमों की ओर से बढ़ाए गए नामों को एग्जाई कर फाइनल लिस्ट बनाने के लिए पार्टी के स्ट्रेटजिक मैनेजमेंट को खासी मशक्कत करना पड़ी है

चुनाव में अभी तीन बरस, इसलिए एसआईआर में नहीं ले रहे रुचि

सूबे में विधानसभा चुनाव में अभी तीन बरस बाकी हैं, शायद यही वजह है कि चुनाव आयोग द्वारा चलाई जा रही एसआईआर मुहिम में ग्वालियर चंबल अंचल में कांग्रेस और भाजपा दोनों ही दलों के नेताओं से लेकर कार्यकर्ता तक खास रुचि नहीं दिखा रहे. दोनों दलों के कार्यकर्ता यह सोच बैठे हैं कि ढाई साल बाद विधानसभा चुनाव के पहले मतदाता सूचियों के प्रारंभिक प्रकाशन उपरांत दावे आपत्ति लेने की प्रक्रिया में नामों की घटाबढ़ करा लेंगे.

कार्यकर्ताओं के बड़े तबके के इस भ्रम को दूर करने भाजपा के राष्ट्रीय एसआईआर प्रभारी तरुण चुघ को ग्वालियर आना पड़ा. वे दिनभर मैराथन बैठकों में व्यस्त रहे. मप्र कांग्रेस में एसआईआर प्रभारी की जिम्मेदारी संभाल रहे पीसी शर्मा तो लगभग हर हफ्ते ही ग्वालियर आ रहे हैं. पीसी जिले के लगभग हर विधानसभा क्षेत्र में पहुंचकर भोपाल से आई टीम के साथ पदाधिकारियों को ट्रेनिंग दे चुके हैं. इन दौरों के बाद दोनों दलों में सक्रियता बढ़ी है.

बिहार विजेता के अंदाज में नरोत्तम का स्वागत, मिल सकता है इनाम

बिहार चुनाव में एनडीए की जीत के बाद पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा जब पहली बार दतिया आए तो पीताम्बरा नगरी की सड़कों पर उनका कुछ इस अंदाज में स्वागत हुआ, जैसे वे खुद चुनाव जीतकर आए हैं, वो दिन याद आ गए जब वे प्रदेश में मिनिस्टर बनने के बाद पहली मर्तबा दतिया आए थे. वैसे यह सच है कि बिहार चुनाव में मप्र की इस धार्मिक नगरी के नेता ने बड़ी जिम्मेदारी संभाली, खास बात यह कि जिन सीटों पर उन्होंने चुनाव प्रचार किया, वहां भाजपा को कामयाबी भी मिली. नरोत्तम चुनाव प्रचार के लिए दतिया और डबरा से एक बड़ी टोली भी ले गए थे. प्रदेश की राजनीति में फिलहाल हाशिए पर चल रहे नरोत्तम के समर्थकों को उम्मीद है कि बिहार की मेहनत उनके सियासी सफर में कुछ तो फूल खिलाएगी, राज्यसभा के टिकट और भाजपा की प्रदेश अध्यक्षी हासिल करने में नाकाम रहने के बाद अब नरोत्तम को किसी वजनदार निगम मंडल की जिम्मेदारी मिलने की अटकलें लगाई जा रही हैं.

आरक्षण की मर्यादा तो माननी ही पड़ेगी

स्थानीय निकाय चुनाव में आरक्षण के नाम पर मनमानी नहीं की जा सकेगी. समय रहते सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार को कड़ी चेतावनी दे दी कि किसी भी स्थिति में यदि जातिगत आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाई गई तो वह निकाय चुनाव पर तुरंत रोक लगा देगा. यदि राज्य सरकार यह दलील दे रही है कि नामांकन शुरू हो गया है और अदालत को अपना काम रोक देना चाहिए तो चुनाव पर रोक लगा दी जाएगी. न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि राज्य सरकार ने आरक्षण के प्रतिशत में कोई भी फेरबदल किया तो वह संवैधानिक अधिकतम सीमा 50 फीसदी तक ही रहना चाहिए. संविधान पीठ का आदेश भंग कर चुनाव नहीं होने दिए जाएंगे. राज्य में स्थानीय निकाय चुनाव 2022 की जेके बांठिया आयोग की रिपोर्ट से पहले की स्थिति के अनुसार ही कराए जा सकते हैं. ओबीसी आरक्षण में वृद्धि करने संबंधी महाराष्ट्र सरकार की दलील बांठिया आयोग की रिपोर्ट पर आधारित है. यह रिपोर्ट ट्रिपल टेस्ट पास करती है या नहीं, इसकी जांच करनी होगी. सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस सूर्यकांत व जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि उसके 6 मई के उस आदेश का गलत अर्थ लगाया जा रहा है जिसमें चुनाव कराने का मार्ग प्रशस्त किया गया था. अदालत ने कभी भी आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से ऊपर बढ़ाने की अनुमति या सहमति नहीं दी. जस्टिस सूर्यकांत ने राज्य के अधिकारियों को कड़ी फटकार सुनाते हुए कहा कि ये अधिकारी अदालत के सरल आदेशों को जटिल बना रहे हैं. उन्होंने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से सीधा सवाल किया कि आखिर किसी भी हालत में आरक्षण 50 फीसदी से ज्यादा कैसे हो सकता है? सुप्रीम कोर्ट ने उन याचिकाओं पर भी नोटिस जारी किया जिनमें आरोप लगाया गया था कि राज्य के स्थानीय निकाय चुनावों में आरक्षण 70 प्रतिशत तक पहुंच गया है.

जस्टिस सूर्यकांत ने राज्य के अधिकारियों को कड़ी फटकार सुनाते हुए कहा कि ये अधिकारी अदालत के सरल आदेशों को जटिल बना रहे हैं. उन्होंने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से सीधा सवाल किया कि आखिर किसी भी हालत में आरक्षण 50 फीसदी से ज्यादा कैसे हो सकता है?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चुनाव के बाद उजड़ गया खेमा लालू परिवार में कलह का ड्रामा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल की बुरी तरह पराजय के बाद लालू परिवार की जमीन खिसक गई. जरा सोचिए कि रेलमंत्री रहते समय लालू ने लैंड फॉर जॉब का चक्कर चलाकर बिहारियों को रेल में क्लास फोर नौकरियां दीं और बदले में जमीन का पट्टा अपने परिवारजनों के नाम लिखवा लिया था. चारा घोटाला और जमीन घोटाला जिस परिवार के लिए किया वही बिखर गया. इसे देखकर हमें दर्द भरा गीत याद आता है देखी जमाने की यारी, बिछुड़े सभी बारी-बारी!'

हमने कहा, 'लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य ने अपने भाई तेजस्वी यादव व उनके निकट सहयोगियों संजय यादव और रमीज पर आरोप लगाया कि इन लोगों ने उसे अपमानित कर घर से बाहर फेंक दिया. रोहिणी ने कहा कि उन लोगों ने कहा कि मैंने अपनी गंदी किडनी लालू को डोनेट की और बदले में करोड़ों रुपए और लोकसभा का टिकट लिया. लालू की 7 बेटियों में से 3 रागिनी, चंदा और राजलक्ष्मी अपने पिता का पटना निवास छोड़कर चली गईं. इसके पहले गत वर्ष लालू ने अपने बड़े बेटे तेजप्रताप यादव से नाता तोड़ लिया था और पार्टी से निकाल दिया था.'

पड़ोसी ने कहा, 'तेजप्रताप नौटंकीबाज है. वह पीले वस्त्र पहनता और बांसुरी बजाता है. वह धमकी देता है कि अब सुदर्शन चक्र चलेगा. तेजप्रताप ने रोहिणी की तरफदारी करते हुए कहा कि लालू एक इशारा करें तो बिहार की जनता इन गद्दारों को जमीन में गाड़ देगी.'

हमने कहा, 'चुनाव हारने की बौखलाहट से लालू के कुनबे का माथा फिर गया है. जंगल राज चलाने वालों के परिवार में जंग छिड़ गई है. नौवीं फेल तेजस्वी, इंजीनियर रह चुके नीतीश कुमार का मुकाबला नहीं कर पाए. भाजपा के रथ ने राजद को रौंदकर रख दिया. लालू परिवार पर शनि, राहु-केतु की दशा चल रही है. परिवार में वॉर छिड़ गया है. पाप की कमाई करने वालों का आगे चलकर यही हाल होता है. चुनाव चिन्ह लालटेन के साथ किस्मत भी फूट गई. छाई हार की हताशा, लालू के घर में तमाशा.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12086 - डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	4	■	5	6
	■	7			■	■	
8	9		■	10	11	12	
13			14	■	15		
■	16				■		■
17		■		■	18		19
	■	20		21		■	
22			■	23			

बाएं से दाएं

1. एक पूर्व भारतीय विश्व सुंदरी जो फिल्म अभिनेत्री है 4. किसी दुखदायी घटना के कारण मन में उत्पन्न होने वाला कष्ट, मातम 7. मोटे कपड़े की दीवार जिससे कोई स्थान घेरा जाता है (उर्दू) 8. असत्य, अशुद्ध (उर्दू) 10. पक्षी, बादल 13. नटकला में प्रवीण व्यक्ति, श्रीकृष्ण 15. नियम से बांधना, बंधन, अरब का एक प्रदेश 16. करामात, काम, हुनर 17. संख्यावाचक शब्दों में अंत में लगकर विशेष शब्द की संख्या अथवा मात्रा में उतनी बार का अर्थ सूचित करता है 18. यत्न 20. दूसरों से धन लेकर वसूल करना 22. बहुत सुंदर, लुभावना (उर्दू) 23. परिवर्तित (उर्दू)

ऊपर से नीचे

1. वह स्त्री जिसका पति जीवित हो 2. शक्तिशाली, बलवान 3. फौज 4. झुकाव 6. काटने से बचा हुआ छोटा रद्दी टुकड़ा 9. किसी आधार से नीचे की ओर टंगना, काम का अधूरा पड़ा रहना 11. डर 12. विस्मित, चकित 14. 19 विवाह आदि के अवसर पर रात भर जागना 17. पाप, अपराध, दोष (उर्दू) 18. महाशय, महोदय (उर्दू) 19. अनुकृति, अनुकरण, प्रतिलिपि (ई) 20. 'उस' का बहुवचन 21. जो मार डाला गया हो, नष्ट (सं.)

Solution 12085

शो	भा	य	मा	न	■	भा	वी
क	ल	■	त	र	ब	त	र
स्था	■	स	ह	म	त	■	ता
न	सी	ह	त	■	■	धा	■
■	धा	न	■	म	ख	म	ल
प्रा	■	शी	त	ल	ता	■	ती
ची	त	ल	■	म	ना	ना	■
र	ट	■	शू	ल	■	ती	खा

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफ्लता मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, वर्ष केमध्य में सत्ता सुख मिलेगा, स्थाई लाभ का योग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, भागदौड़ के बाद सफ्लता मिलेगी, अधिकारियों से मतभेद में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांति का अनुभव करेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मतभेद भी होंगे, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतोष रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम का फ्ल अधिक प्राप्त होने का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ से अच्छी सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, एकांतप्रिय, ईमानदार, होगा, परिश्रमी दृढ़ निश्चयी होगा, साहसिक कार्य करने वाला, बुद्धि का तेज होगा, बचपन में स्वास्थ्य कुद नरम गरम रहेगा, बाद में अच्छा स्वास्थ्य रहेगा, आर्थिक स्थिति जीवन भर अच्छी रहेगी.

मेष- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, लोगों की बातों से मन परेशान रहेगा, दिनचर्या नियमित रहेगी, व्यापार व्यवसाय में अच्छी सफ्लता प्राप्त होगी.

वृषभ- सूझबूझ से फैसला लेने में सफ्लता मिलेगी, जिद में आकर अपना नुकसान न करें, आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी, दैनिक कार्यो में परिवर्तन होगा.

मिथुन- योजनाओं को पूरा करने में मदद मिलेगी, इच्छानुसान सभी कामकाज पूर्ण होंगे, संपर्क सुखद एवं लाभदायक रहेगा, आत्म विश्वास में वृद्धि होगी.

कर्क- पारिवारिक आयोजन में शामिल होकर खुशी मिलेगी, राजकीय उलझनें दूर होंगी, अधिकारियों से सहयोग मिलेगा, नई जबावदारी आ सकती है.

सिंह- नए सौदे हाथ में आने से अच्छा लाभ होगा, विवाह की चर्चाओं में सफ्लता मिलेगी, भाग्यवर्धक प्रयास पूर्ण होंगे, निजी मामलों में सामंस्य बना रहेगा.

कन्या- सामाजिक कार्यो में भागीदारी बढ़ेगी, मेहनत के बावजूद सफ्लता मिलना मुश्किल है, आर्थिक समस्या का समाधान होगा, पारिवारिक विवादों को टाले.

तुला- विरोधी उलझाने का प्रयास कर सकते हैं, मेहमानों की आवाजाही बनी रहेगी, पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, नये मित्रों से मुलाकात होगीं

वृश्चिक- संबंधों को बेहतर बनाने बनाने की कोशिश करेंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यो में व्यस्तता रहेगी, पारिवारिक जबावदारी बढ़ेगी, धार्मिक कार्यों में मन लगेगा.

धनु- तनाव की स्थिति में परिवार का साथ खुशी देगा, रोजगार के इच्छित अवसर मिल सकते हैं, अनावश्यक विवादों से बचने का प्रयास करें.

मकर- राजकीय मामलों में पक्ष मजबूत होगा, प्रापर्टी खरीदने का मन बनेगा, अत्याधिक व्यस्तता होगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, निजी मामलों में एक रूपता रहेगी.

कुम्भ- मामूली बात को लेकर कार्यस्थल पर परेशानी होगी, श्रम एवं प्रयास करने से विरोधियों का शमन होगा, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा.

मीन- युवाओं को कैरियर में बेहतर परिणाम मिल सकते हैं, तय कार्यक्रम में बदलाव से परेशानी होगी, प्रिय व्यक्ति के आगमन से प्रसन्नता रहेगी, खानपान पर ध्यान दें.

उदयकालीन ग्रह चाल

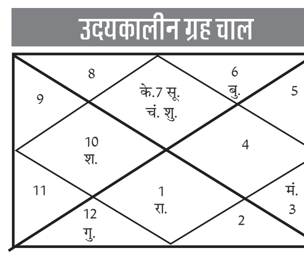

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या गुरूवासरे दिन 11/1, विशाखा नक्षत्रे दिन 10/47, शोभन योगे दिन 10/32, नाग करणे सू.उ. 6/39, सू.अ. 5/21, चन्द्रचार वृश्चिक, पर्व- स्नानदान अमावस्या, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड़, खांड़, चीनी, मोट, आदि में तेजी होगी, घी, गुड़, जौ, चना, के भाव में नरमी होगी. भाग्यांक 3712 है.

SUDOKU 7218

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7217

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8